ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2023; 9(1): 434-438
www.allresearchjournal.com
Received: 07-11-2022
Accepted: 13-12-2022

सुबोध साह
शोधकर्ता (शिक्षा), शिक्षा विभाग, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वर नगर, दरभंगा, बिहार, भारत

डॉ० मो० एहसानुल हक
प्राचार्य, मिथिला शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, बसुआड़ा, मधुबनी, बिहार, भारत

Corresponding Author:
सुबोध साह
शोधकर्ता (शिक्षा), शिक्षा विभाग, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वर नगर, दरभंगा, बिहार, भारत

सूक्ष्म शिक्षण में कौशलों के प्रयोग की व्यावहारिकता - एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

सुबोध साह, डॉ० मो० एहसानुल हक

सारांश
माइक्रोटीचिंग, एक शिक्षक प्रशिक्षण तकनीक जो वर्तमान में दुनिया भर में प्रचलित है, शिक्षकों को शिक्षण कौशल नामक विभिन्न सरल कार्यों में सुधार करके अपने शिक्षण कौशल को बढ़ाने का अवसर प्रदान करती है। नौसिखियों और वरिष्ठों के बीच सिद्ध सफलता के साथ, सूक्ष्म शिक्षण वास्तविक समय के शिक्षण अनुभवों को बढ़ावा देने में मदद करता है। सूक्ष्म शिक्षण के मूल कौशल जैसे प्रस्तुतिकरण और पुनर्बलन कौशल नौसिखिए शिक्षकों को आसानी से और अधिकतम सीमा तक शिक्षण की कला सीखने में मदद करते हैं। इस तकनीक का प्रभाव शिक्षा के विभिन्न रूपों जैसे स्वास्थ्य विज्ञान, जीवन विज्ञान और अन्य क्षेत्रों में व्यापक रूप से देखा गया है। शैक्षणिक कौशल सीखने-सिखाने की प्रक्रिया की गुणवत्ता को बढ़ा सकते हैं, सहयोगी शिक्षा को मजबूत कर सकते हैं, बोरियत को तोड़ सकते हैं और व्यक्तिगत सीखने के अनुभव को सुविधाजनक बना सकते हैं। एक सफल और प्रभावशाली शिक्षण अनुभव बनाने के रहस्यों को उजागर करने के लिए शैक्षणिक कौशल विश्लेषण आवश्यक है। मजबूत शैक्षणिक कौशल वाले शिक्षक सच्चे शिक्षा नेता हैं, जो छात्रों को उनकी पूरी क्षमता तक पहुंचने और अकादमिक सफलता हासिल करने में मदद करते हैं। इसलिए, यदि आप एक शिक्षक हैं और कक्षा में वास्तविक बदलाव लाना चाहते हैं, तो आज ही अपने सुरसा मेंटर से बात करें ! यह आपके कैलेंडर और सीखने की प्राथमिकता के साथ संरेखित होता है, विशेषज्ञों से मार्गदर्शन प्राप्त करके, आप अपने छात्रों के लिए एक प्रभावशाली और सफल सीखने का अनुभव बना सकते हैं और एक सच्चे शिक्षा नेता बन सकते हैं। रुको मत! अपने शिक्षण कैरियर के लक्ष्यों की ओर पहला कदम उठाएं।

कूटशब्द : माइक्रोटीचिंग, सूक्ष्म शिक्षण, शिक्षण कैरियर, शिक्षक

प्रस्तावना
शिक्षण की कला में केवल ज्ञान का एक से दूसरे में सरल हस्तांतरण शामिल नहीं है। इसके बजाय, यह एक जटिल प्रक्रिया है जो सीखने की प्रक्रिया को सुगम और प्रभावित करती है। एक शिक्षक की गुणवत्ता का अंदाजा इस बात से लगाया जाता है कि छात्र उसके शिक्षण से कितना समझते हैं। प्राथमिक शिक्षण कौशल प्राप्त करने के लिए कक्षाओं को सीखने के मंच के रूप में उपयोग नहीं किया जा सकता है।

विशिष्ट शिक्षण कौशल में चिकित्सा शिक्षकों का प्रशिक्षण चिकित्सा शिक्षा कार्यक्रमों में एक बड़ी चुनौती है। शिक्षण के लिए शैक्षणिक कौशल केवल अधिक संरचित और सस्ती संकाय प्रशिक्षण तकनीकों के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है। लगभग पांच दशक पहले सूक्ष्म शिक्षण की शुरुआत के साथ, शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में वैज्ञानिक रूप से सिद्ध या प्रभावी तरीकों की कमी को दूर किया गया है।

इस आलेख का उद्देश्य न्यूनतम उपलब्ध सुविधाओं के साथ अधिक बार और कुशलता से सूक्ष्म शिक्षण तकनीकों का उपयोग करने की आवश्यकता पर जोर देना है। विभिन्न शैक्षिक डेटाबेस से शोध लेखों और समीक्षाओं की एक व्यवस्थित साहित्य खोज की गई। प्रकाशित लेखों की संदर्भ सूचियों से उपलब्ध पुस्तकों की भी समीक्षा की गई। प्रभावी शिक्षाशास्त्र में प्रत्येक छात्र की अनूठी जरूरतों और सीखने की शैलियों को समझना और तदनुसार निर्देश देना शामिल है। इसमें सक्रिय सीखने के अवसर पैदा करना भी शामिल है, जैसे समूह चर्चा, व्यावहारिक गतिविधियां और समस्या समाधान अभ्यास। रचनात्मक शिक्षाशास्त्र में लीक से हटकर सोचना और छात्रों को शामिल करने के नए तरीके खोजना शामिल है। इसमें तकनीक का उपयोग करना, कला या संगीत को शामिल करना, या इंटरैक्टिव गेम या सिमुलेशन डिजाइन करना शामिल हो सकता है।

सही शिक्षण कौशल के साथ, आप एक ऐसा वातावरण बना सकते हैं जहाँ आपके छात्र फल-फूल सकें और अपनी क्षमता को पूरा कर सकें। आप अपनी कक्षाओं को आकर्षक, उत्पादक और सभी के लिए मज़ेदार बनाने के लिए आवश्यक हर चीज़ से लैस होंगे। हम ईमानदार हो; कोई भी कुछ नया सीखने की कोशिश में बोर नहीं होना चाहता।

शैक्षणिक कौशल का महत्व

कक्षा में छात्रों को शामिल करने के लिए शिक्षक शैक्षणिक कौशल का उपयोग करता है। शिक्षण एक सम्मानजनक पेशा है, फिर भी हर कोई अविश्वसनीय नहीं हो सकता। तो क्या एक अच्छे शिक्षक को एक असाधारण से अलग करता है? यह न केवल उनके ज्ञान का पूल है बल्कि शिक्षित करने और सिखाने की उनकी क्षमता और विज्ञान भी है, और इसे शिक्षाशास्त्र के रूप में जाना जाता है।

शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षाशास्त्र एक रहस्यमय घटक है जो एक साधारण शिक्षक को एक उल्लेखनीय शिक्षक में बदल सकता है। उनके साथ, कक्षा अधिक रोमांचक और आकर्षक बन सकती है।

ये क्षमताएँ इस हद तक महत्वपूर्ण हैं कि वे उत्कृष्ट शिक्षार्थियों के साथ-साथ संघर्ष करने वालों की शैक्षणिक उपलब्धि को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित कर सकती हैं। इसके अलावा, उल्लेखनीय शैक्षणिक कौशल के साथ, शिक्षक अपने शिक्षण-सीखने के तरीकों और रणनीतियों का आकलन कर सकते हैं और शिक्षार्थियों को सबसे चुनौतीपूर्ण विषयों या विषयों में भी विशेषज्ञ बना सकते हैं। इस प्रकार, यदि आपको एक असाधारण प्रशिक्षक बनने की आवश्यकता है, तो अपनी शैक्षणिक क्षमताओं को बढ़ावा देना एक निर्विवाद आवश्यकता है!

शिक्षकों के लिए शैक्षणिक कौशल के लाभ

शिक्षकों के लिए शैक्षणिक कौशल के कई लाभ हैं। आइए उनमें से कुछ को विस्तार से देखें:

निर्देशात्मक वितरण के मानक में सुधार

छात्र विविध पृष्ठभूमि से आते हैं और सीखने की शैलियों और क्षमताओं की एक विस्तृत श्रृंखला रखते हैं। समावेशी शिक्षा के लिए शिक्षकों को सभी छात्रों की जरूरतों को पूरा करने के लिए विभिन्न प्रकार के निर्देशात्मक तरीकों को नियोजित करने की आवश्यकता होती है।

सूक्ष्म शिक्षण शिक्षण कौशल सीखने के लिए एक शिक्षक प्रशिक्षण तकनीक है। यह कौशल विकसित करने के लिए वास्तविक शिक्षण स्थिति का उपयोग करता है और शिक्षण की कला के बारे में गहन ज्ञान प्राप्त करने में मदद करता है। इस स्टैनफोर्ड तकनीक में "योजना बनाना, पढ़ाना, निरीक्षण करना, फिर से योजना बनाना, फिर से पढ़ाना और फिर से निरीक्षण करना" के चरण शामिल थे और परिसर में नैदानिक शिक्षण विकास कार्यक्रमों के 91% में मुख्य घटक के रूप में विकसित हुआ है, जिसमें महत्वपूर्ण कमी आई है। कक्षा में छात्रों की संख्या, सामग्री का दायरा, और समय सीमा, आदि के संबंध में शिक्षण जटिलताएं अधिकांश पूर्व-सेवा शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम व्यापक रूप से सूक्ष्म शिक्षण का उपयोग करते हैं, और यह निर्देशात्मक अनुभवों में सकल सुधार प्राप्त करने का एक सिद्ध तरीका है। प्रभावी छात्र शिक्षण एक शिक्षक का प्रमुख गुण होना चाहिए। शिक्षकों को प्रभावी बनाने के लिए एक अभिनव पद्धति के रूप में, सूक्ष्म शिक्षण के कौशल और प्रथाओं को लागू किया गया है।

कुशल तकनीक और प्रभावी शिक्षण

सूक्ष्म शिक्षण का अभ्यास बहुत छोटे पाठ या एक अवधारणा और कम संख्या में छात्रों के साथ किया जा सकता है। यह वास्तविक शिक्षण की जटिलताओं को कम करता है, क्योंकि प्रत्येक अभ्यास सत्र के बाद तत्काल प्रतिक्रिया मांगी जा सकती है। आधुनिक समय के मल्टीमीडिया उपकरण जैसे ऑडियो-वीडियो रिकॉर्डिंग उपकरणों की सीखने की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

एक साथी शिक्षक का अवलोकन करना और स्वयं के शिक्षण सत्रों में परीक्षण और त्रुटि का उपयोग करना स्व-प्रशिक्षण का बहुत ही सामान्य तरीका है। लेकिन, दोनों की अपनी-अपनी कमियां हैं। दूसरी ओर, सूक्ष्म शिक्षण त्रुटियों को दूर करने में मदद करता है और शुरुआती और वरिष्ठ शिक्षकों के लिए मजबूत शिक्षण कौशल बनाता है। सूक्ष्म शिक्षण से आत्मविश्वास बढ़ता है, कक्षा में शिक्षण प्रदर्शन में सुधार होता है, और कक्षा प्रबंधन कौशल विकसित होता है।

सूक्ष्म शिक्षण के चरण और आवश्यकताएं

ज्ञान अर्जन, कौशल अर्जन, और अंतरण सूक्ष्म शिक्षण के तीन अलग-अलग चरण हैं। आकृति सूक्ष्म शिक्षण के विभिन्न चरणों का वर्णन करता है। ज्ञान प्राप्ति चरण प्रारंभिक, पूर्व-सक्रिय चरण है, जिसमें शिक्षक व्याख्यान, चर्चा, चित्रण और कौशल के प्रदर्शन के माध्यम से विशेषज्ञों द्वारा कौशल और शिक्षण के घटकों पर प्रशिक्षित होता है। इंटरैक्टिव, कौशल अधिग्रहण चरण में, शिक्षक प्रदर्शित कौशल का अभ्यास करने के लिए एक सूक्ष्म पाठ की योजना बनाता है। सहकर्मी और साथी रचनात्मक मूल्यांकनकर्ता के रूप में कार्य कर सकते हैं जो उन्हें अपनी शिक्षण-अर्जन प्रथाओं को संशोधित करने में भी सक्षम बनाता है। शिक्षक उन व्यवहारों और कौशलों को सुदृढ़ कर सकते हैं जो आवश्यक हैं और जो आवश्यक नहीं हैं उन्हें समाप्त कर सकते हैं। अंततः, वे इस सीखे हुए कौशल को सिम्युलेटेड शिक्षण स्थिति से वास्तविक कक्षा शिक्षण में एकीकृत और स्थानांतरित कर सकते हैं। प्रत्येक मुख्य शिक्षण कौशल की अवधारणाओं और घटकों को समझने के बाद, प्रतिभागी को प्रत्येक मुख्य शिक्षण कौशल के लिए एक सूक्ष्म-पाठ तैयार करना चाहिए, और प्रत्येक सूक्ष्म शिक्षण सत्र में क्रमिक तरीके से एक कौशल को लागू करना चाहिए। सेटिंग साप्ताहिक या मासिक आधार पर न्यूनतम सुविधाओं के साथ विभाग में ही की जा सकती है। प्रत्येक कौशल के लिए पर्याप्त और उपयुक्त रचनात्मक प्रतिक्रिया कौशल के पुनः शिक्षण और पुनः कार्यान्वयन को प्रोत्साहित कर सकती है। फीडबैक डेटा का पुनः उपयोग किया जा सकता है, और सभी मुख्य शिक्षण कौशल को एक मैक्रो पाठ में और अंततः एक वास्तविक कक्षा शिक्षण या चिकित्सा शिक्षा कार्यक्रमों में एकीकृत किया जा सकता है। संपूर्ण संकाय प्रशिक्षु और रचनात्मक मूल्यांकनकर्ताओं की दोहरी भूमिका निभाते हैं। इससे शिक्षक के मूल्यांकन कौशल में भी सुधार होता है। हालांकि प्रारंभिक सत्रों के दौरान उचित प्रतिक्रिया प्रदान नहीं करने की संभावना है, लेकिन जब सत्रों की संख्या में वृद्धि होती है तो मूल्यांकन करने और रचनात्मक प्रतिक्रिया प्रदान करने की कुशल क्षमता बढ़ जाती है।

नैदानिक शिक्षण में लागू मूल कौशल

सूक्ष्म शिक्षण में शामिल मुख्य तकनीकें इस तथ्य पर आधारित हैं कि विभिन्न सरल शिक्षण कार्यों/कौशलों का उपयोग करके शिक्षण का विश्लेषण और अनुमान लगाया जा सकता है, जो व्यवहार का एक समूह है या शिक्षक के कार्य हैं जो सीखने (प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से) की सुविधा प्रदान करते हैं। सूक्ष्म शिक्षण की उत्पत्ति के दौरान लगभग 20 शिक्षण कौशलों की पहचान की गई है। लेकिन, अब यह बढ़कर 37 या इससे भी ज्यादा हो गई है। नीचे सूचीबद्ध कुछ महत्वपूर्ण शिक्षण कौशल हैं।

पाठ का नियोजन

इसमें एक सूक्ष्म-पाठ की तैयारी शामिल है जिसे एक तार्किक क्रम में व्यवस्थित किया जाना चाहिए। सामग्री संक्षिप्त, उपयुक्त, प्रासंगिक होनी चाहिए और निर्दिष्ट अवधि को कवर कर सकती है।

प्रस्तुति और स्पष्टीकरण

इसमें अवधारणाओं की स्पष्टता और उचित समझ के साथ व्याख्या करने के लिए आवश्यक कौशल शामिल हैं। घटकों में शामिल हैं शिक्षक का उत्साह, प्रारंभिक वक्तव्य या विषय वाक्य, प्रभावी व्याख्या, नियोजित पुनरावृत्ति, और निष्कर्ष के बयानों या स्पष्टीकरण के सारांश के साथ प्रमुख संदेशों द्वारा तत्परता पैदा करना।

उदाहरणों के साथ चित्रण

शिक्षार्थियों की समझ बढ़ाने के लिए शिक्षक प्रशिक्षु को सरल, प्रासंगिक और रोचक उदाहरणों द्वारा अवधारणा को सही ढंग से समझाने में सक्षम होना चाहिए।

सुदृढीकरण

यह कौशल शिक्षण प्रक्रिया के विकास में शिक्षार्थियों की भागीदारी बढ़ाने के लिए है। इस कौशल के लिए सकारात्मक मौखिक और गैर-मौखिक संकेतों का उपयोग प्रमुख घटक होगा।

प्रोत्साहन भिन्नता

एक अच्छे शिक्षक के लिए शिक्षार्थी का ध्यान सुरक्षित रखना और बनाए रखना अत्यावश्यक है। इशारों, भाषण पैटर्न में बदलाव और बातचीत की शैली में बदलाव कौशल के प्रभावी घटक हैं।

प्रश्न पूंछना

साथी प्रशिक्षुओं को संरचित प्रश्न पूछने और शंकाओं को स्पष्ट करने की अनुमति देना और प्रोत्साहित करना महत्वपूर्ण है। पुनर्निर्देशन, पुन: ध्यान केंद्रित करना और महत्वपूर्ण जागरूकता बढ़ाना इस कौशल के महत्वपूर्ण घटक हैं।

कक्षा प्रबंधन

उचित निर्देश देना, अनुचित व्यवहार को रोकना और शिक्षार्थियों को नाम से बुलाना इस कौशल के अनिवार्य गुण हैं।

दृश्य-श्रव्य साधनों का उपयोग करना

इस कौशल के लिए दृश्य-श्रव्य साधनों के बारे में जागरूकता बढ़ाना महत्वपूर्ण है। पर्याप्त दूरी, अलग आकार, शब्दों और पंक्तियों के बीच उचित दूरी और प्रासंगिक शब्दों या वाक्यांशों का उपयोग इस कौशल के प्रमुख घटक हैं।

शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों के लिए उचित अभ्यास आवश्यक माना जाता है, क्योंकि यह प्रशिक्षुओं को अपना पहला शिक्षण अनुभव प्राप्त करने में मदद करता है और ज्ञान, कौशल और दृष्टिकोण विकसित करने में मदद करता है। लेकिन, चिकित्सा शिक्षा प्रशिक्षण में सूक्ष्म शिक्षण सत्रों के लिए समय प्रमुख बाधा बना हुआ है। इन परिणामों के परिणामस्वरूप न तो सभी कौशलों का अभ्यास किया जाता है और न ही सभी प्रशिक्षुओं को पुनर्योजना और पुन: शिक्षण गतिविधियों का अवसर दिया जाता है। जब तक शिक्षक प्रभावी छात्र शिक्षण की गुणवत्ता हासिल नहीं कर लेता, तब तक प्रशिक्षण अप्रभावी हो जाता है।

सूक्ष्म शिक्षण की अन्य सीमाओं में निम्नलिखित शामिल हैं: कक्षा का आकार बड़ा होने पर सामग्री पर कोई जोर नहीं, कौशल निर्भरता और प्रशासनिक/संभाल संबंधी समस्याएं। विभागीय स्तर पर गतिविधियों को कई क्रमों में क्रियान्वित कर इसे कम किया जा सकता है। व्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम तभी संभव हैं जब शिक्षक मुख्य कौशल से अच्छी तरह सुसज्जित हों। इसके बाद इन कार्यक्रमों का प्रभावी ढंग से नए कौशल सीखने और मौजूदा कौशल को मजबूत करने और विस्तार करने के लिए उपयोग किया जा सकता है। इसलिए, संकाय द्वारा शिक्षण प्रक्रिया की जटिलताओं की बेहतर समझ अधिक महत्वपूर्ण है।

भारत में, सूक्ष्म शिक्षण तकनीक को विभिन्न कारणों से कम आंका गया है और इसका कम उपयोग किया गया है। सूक्ष्म शिक्षण के किफायती, सरल तरीकों का अभ्यास करने से देश के लिए बेहतर शिक्षक विकसित करने में मदद मिलेगी।

निष्कर्ष:

माइक्रोटीचिंग एक केंद्रित साधन के रूप में काम करता है जो किसी भी उम्र में आवश्यक शिक्षण कौशल को सुरक्षित और प्रभावी ढंग से अभ्यास करने में मदद करता है। यह पत्र प्रभावी शिक्षण के लिए प्रभावी शिक्षण तकनीक के रूप में सूक्ष्म शिक्षण का वर्णन करता है। सीखना व्यवहार में बदलाव है, जो किसी भी उम्र में गतिविधि, प्रशिक्षण या अनुभव के द्वारा लाया जाता है। जब सीखने वाला अधिक अनुभवी होता है, तो सीखना अधिक प्रभावी होता है। सूक्ष्म शिक्षण सत्र के प्रतिभागियों का सबसे महत्वपूर्ण गुण खुले दिमाग से रचनात्मक प्रतिक्रिया देने और प्राप्त करने की क्षमता है और उपयुक्त शिक्षण-सीखने के लक्ष्यों को प्राप्त करता है। इसके अलावा, यह मित्रता और समता के वातावरण में शिक्षक के आत्मविश्वास को बढ़ाता है।

संदर्भ

1. फोली आरपी। शिक्षक प्रशिक्षण के लिए सूक्ष्म शिक्षण। सार्वजनिक स्वास्थ्य पैप। 1974
2. इलियट जे। मेडुन्सा में एक सूक्ष्म शिक्षण प्रयोग। एस अफ्र मेड जे. 1982
3. एलन डीडब्ल्यू, वांग डब्ल्यू बीजिंग: सिन्हुआ प्रेस; 1996. सूक्ष्म शिक्षण।

4. सिंह एलसी, शर्मा आरडी। नई दिल्ली: शिक्षक शिक्षा विभाग एनसीईआरटी; 1987. माइक्रो-टीचिंग - थ्योरी एंड प्रैक्टिस।
5. चेन क्यू, ज़ेंग एफ, यांग जेड। चिकित्सा शिक्षक के सूक्ष्म शिक्षण प्रशिक्षण में मल्टीमीडिया निगरानी प्रणाली के प्रभावों पर अध्ययन। कंप्यूट इन्फ साइंस। 2010
6. ब्राउन जी. लंदन: मेथुएन एंड कंपनी लिमिटेड; 1975. सूक्ष्म शिक्षण। शिक्षण कौशल का एक कार्यक्रम।
7. एलन डीडब्ल्यू, रयान के. रीडिंग। मैसाचुसेट्स: एडिसन-वेस्ले; 1969. सूक्ष्म शिक्षण।
8. क्रुकशैंक डीआर, बैनियर डी, क्रूज़ जे, जूनियर, गिबेलहॉस सी, मैक्कुलो जेडी, मेटकाफ केएम। ब्लूमिंगटन, IN: फी डेल्टा कप्पा; 1996. अमेरिका के शिक्षकों की तैयारी।
9. इस्माइल, सादिक अब्दुलवाहीद अहमद। जे लैंग टीच रेस। 2011
10. पॉलीन आरएफ। सूक्ष्म शिक्षण, विज्ञान पद्धति वर्ग का एक अभिन्न अंग। जे साइंस टीच एडुक। 1993
11. बेल ए, म्लाडेनोविक आर। ट्यूटर विकास के लिए शिक्षण के सहकर्मी अवलोकन के लाभ। उच्च शिक्षा। 2008
12. पेंटल आई. नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस; 1980. माइक्रो-टीचिंग-ए हैंड बुक फॉर टीचर्स।